हिन्दी विभाग

स्नातक द्वितीय (II)

पत्र संख्या :- 03

नयी कविता

भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गई उन समस्त कविताओं को नयी कविता कहा जाता है जिनमें पारंपरिक कविताओं से आगे बढ़कर नये भाव-बोध, नये मूल्य और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। माना कि यह अन्वेषण साहित्य में कोई नयी चीज न थी क्योंकि यदि हम ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखे तो प्रायः सभी नये वाद अथवा नयी धारायें अपने पूर्ववर्ती वादों अथवा धाराओं की तुलना में कुछ न कुछ नये अन्वेषण की प्यास लिये दिखाई पड़ती है। किन्तु फिर भी नयी कविता यह नाम स्वाधीनता के पश्चात लिखी गई उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है। नयी कविता का कवि न तो प्राचीन कवियों की तरह अपने

आप को किसी वर्ग विशेष अथवा जीवन के पक्ष विशेष से सम्बन्ध रखना चाहता है और न ही वह प्रयोगवाद की गहन निबिडता, असम्बद्ध अनुभवखण्डों की अभिव्यक्ति, भाषा के नितान्त वैयक्तिक प्रयोग तथा अतिशय प्रयोगशीलता, इत्यादि को साग्रह ग्रहण करने वाले कवियों की पाँत (पंक्ति) में खड़ा होना चाहता है। वह साधारण चरित के वैशिष्ट्य को नहीं अपितु साधारण जीवन को ही सार्थकता देने का प्रयत्न करता है।

हम तो सारा का सारा लेंगे जीवन
कम से कम वाली बात हमसे न कहिये।
(रघुवीर सहाय)

इस प्रकार सारा का सारा जीवन को परम आत्मीय बनाना नयी कविता के कवियों का प्रमुख उद्देश्य है।
मुक्तिबोध ने लिखा है –

जिन्दगी में जो कुछ है जो भी है,
सहर्ष स्वीकारा है
इसलिये कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

नयी कविता आन्दोलन का आरंभ इलाहाबाद की साहित्य संस्था परिमल के कवि लेखकों- जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी और विजयदेव नारायण साही के संपादन में 1954 में प्रकाशित नयी कविता (पत्रिका) से माना जाता है। इससे पहले अज्ञेय के सम्पादन में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'दूसरा सप्तक' की भूमिका तथा उसमें शामिल कुछ कवियों के वक्तव्यों में अपनी कविताओं के लिए 'नयी कविता' शब्द को स्वीकार किया गया था।

नयी कविता के लिए जगत-जीवन से सम्बन्धित और सभी स्थितियाँ, सम्बन्ध, भाव या विचार कथ्य के रूप में त्याज्य नहीं है। जन्म से लेकर मरण तक आज के मानव जीवन का जिन स्थितियों, परिस्थितियों, सम्बन्धों, भावों, विचारों और कार्यों से साहचर्य होता है, उन्हें नयी कविता ने आत्मसात् किया है

इसलिए नयी कविता हिन्दी साहित्य में 1951 के बाद की उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिन्दी कविता की नवीन धारा है। नयी कविता अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है।

प्रस्तुतकर्त्ता

दिनांक 28/10/2020

बैनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो०न०- 8292271047